सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2022 का संयुक्त (चतुर्थ-पंचम) अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस संयुक्तांक में सर्वप्रथम आचार्य माधव शास्त्री लिखित 'नवसंवत्सर' लेख में युगारम्भ की सूक्ष्म काल गणना सहित संवत्सराम्भ विषयक जानकारी प्रदान की गयी है। तत्पश्चात् प्रो. कैलाश चतुर्वेदी द्वारा लिखित 'संवत्सर-वर्ष की वैज्ञानिकता' लेख में संवत्सर एवं वर्षमान के वैज्ञानिक मानकों का औचित्य दर्शाते हुए संवत्सर की महत्ता को उपस्थापित किया गया है। इसी क्रम में डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'संवत्सरस्य वैज्ञानिकं विश्लेषणम्' शोधालेख में वेद विज्ञान में प्रतिपादित संवत्सर के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा लिखित 'नल संवत्सर' शोध लेख में पौराणिक संदर्भों के आधार पर बल की महत्ता एवं संवत्सर के नामकरण के औचित्य को व्यक्त किया गया है। पं. अनन्त शर्मा द्वारा लिखित 'ऐतिहासिक परंपरा में आदि शंकराचार्य का काल' शोध लेख आदिशंकराचार्य के कालनिर्णय को प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करता है जो इतिहासज्ञों के लिए विचारणीय है। इसके पश्चात् ..... द्वारा लिखित ..... शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् प्रो. कैलाश चतुर्वेदी द्वारा लिखित 'वैदिकसृष्टिविज्ञान' शोध लेख में सृष्टि उत्पत्ति विषयक वैदिक अवधारणा का सरलतम प्रस्तुतीकरण हुआ है। इसके पश्चात डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'ऋतुचक्र की वैज्ञानिकता' शीर्ष शोध लेख में ऋतुओं की उत्पत्ति एवं कालगणना व ऋतुचक्र के प्रवर्त्तन का विषय वेदविज्ञान के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावनाशतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा